4-5-67 ओम शान्ति रात्री क्लास

आज तुम बच्चो को थोडा ज्ञान और योग पर समझाते है। फिर है ध्यान और दीदार। कोई ध्यान मे सुन मे चले जाते है। कोई को दीदार होता है। ध्यान और दीदार मे कोई फायदा नही है। बाकी योग और ज्ञान मे फायदा है। ध्यान दीदार मे नुकसान हो सकता है। ज्ञान योग मे नुक्सान नही। ध्यान दीदार मे माया की प्रवेशता होती है। वो बहुत खराब है। इसलिये हमेशा खबरदार रहना चाहिये। बच्चों की ऐम आब्जेक्ट है कि हमको प्रिन्स बनना है। प्रिन्स तो बेता के पिछाडी मे भी बनेंगें। उसमे ही खुश नही होना चाहिये। याद मे रहना चाहिये। याद करते-2 हम सतोप्रधान बन जावेंगें तो हम ऊंच प्रिन्स बनेंगें। बच्चो को समझाया गया है कि भक्ति मार्ग बिलकुल अलग है। उसका ज्ञान से कनेक्शन नही है। भक्ति है दुर्गति। ज्ञान है सदगति। ज्ञान देने वाला ज्ञान सागर ही है। कब भी यह चाहना नां हो कि हमको दीदार हो। वो इतना उठ नही सकेंगें। बच्चे जानते है कि हम कुछ नही जानते थे। बाबा आपही सब कुछ देंगें। ढेर-2 बच्चे है क्या-2 बैठ पूछेंगें। हर एक को घर बैठे ही सब समझानी मिल जाती है। बाप ही सब कुछ जानते है। बच्चे कुछ नही जानते है तो फिर पूछेंगें ही क्या। पूछनें का कुछ रहता ही नही है। हां कहा शादी मे जाना है नही जाना है वो पूछ सकते हैं। इकहीं खावेंगें नही तो कहेंगें भाग जाओं। वो पूछना होता है कि इस हालत मे क्या करें? बाकी सृष्टी चक्र की हर बात बाबा समझाते रहते है। ध्यान वाली पिछाडी कब आशिक नही होना है। समझते है बस साक्षात्कार हुआ तो मंजिल पर पहुंच गये। दिल की आश पुरी हो गई। नही-2 भक्ति मार्ग की आशाये सब निराशाये है। आश पुरी करने वाला एक ही है। मुक्ति जीवन मुक्ति क्या चीज है कोई नही जानते है। बाप ही सब कुछ जानते है। इसलिये उनको नालेज फुल ज्ञान सागर कहा जाता है। भगवान है मनुष्य सृष्टी की बीज रूप उनको ही सत, चैतन कहा जाता है। तो बीज मे क्या नालेज होगी। झाड़ की। मनुष्य मे सारे मनुष्य सृष्टी रूपी सारे झाड़ [illegible] कुछ नही जानते [illegible] से समझाते है। ऐसे [illegible] अवस्था मे नही जाना है। ध्यान मे जाती है भोग ले जाती है। उन बातो मे आशिक नही हो जाना चाहिये। याद तो है नही। विकर्म विनाश तो होते नही है। बाबा की पुआइन्टस भी सुन नही सकते। जब नीचे आवे तब सुने। वो कोई याद की यात्रा नही है। सूक्ष्म वतन मे भोग ले जाते है वो तो है चिटचेट। उन बातो मे नही जाना चाहिये। भोग का राज भी समझाया जाता है। अआत्मा कोई आती है रोती है क्योंकि मेहनत नही की तो पछताना होता है कि हमने वर्सा तो लिया नही और ही गुवाया है। हमने बाप का माना नही है। बाप की मानते नही है तो फिर आसु बहाते है। हो कुछ नही सकता। इसलिय जल्दी-2 याद मे रहो। पिछाडी मे इतना याद मे ठहर नही सकें। जो कि विकर्म विनाश होवें। और ही खिटखिट अफसौस की बाते होती रहेगी। गवर्मेन्ट लूटेगी यह करेगी। यह है ही अति दुःख का जमाना। बाप सुख देने आते है तो बच्चो को बाप की श्रीमत पर चलना चाहिये नां। कब रूठना नही चाहिये। पढ़ाई नही छोड़नी चाहिये। उन जैसा कक्खन कोई नही। भगवान पढ़ाते है 21 जन्म का वर्सा देते है। ऐसे बाप को छोड देते हो? तुम अभी सुनते हो विलायत वाले 10 रोज बाद सुनेंगें। मुरली कब भी बांसी नही होती है। पढे नही है तो बांसी भी नही है। 15 ता: की मुरली उनको 15 ता: को मिलती है तो उनके लिये वो बांसी नही है। बच्चों को कोई भी ऐसी चलन नही करनी चाहिये जिससे कि कोई को घृणा आ। हेयर नो फालतु बाते। बाबा बच्चो को सावधान करते है कि कबभी कोई से भी दुनियां की खबरचार झरमुई, झगमुई नां सुननी चाहिये। भगवान पढाते है तो पढाई मे अच्छा ध्यान देनाचाहिये। यह भी कब खयाल नही आना चाहिये कि हम शिव बाबा को देते है। हम तो 10 रूपये देकर करोड़ लेते है। बहुत खबरदार रहना है। बहुत बच्चे है जो कि एक दो को सुना कर देते है। कि हम यह देते है तो भी ताकत चली जाती है। अहंकार आ जाता है। हम तो शिव बाबा से बहुत लेते है। अभी नही लेंगें तो विनाश सामने खड़ा है। बाद मे सब मिट्ठी मे मिल जावेगा। तो क्यो नही ऐक्सचेंज कर लेवे। बाबा यह हम आपको देते है सतयुग मे लेने लिये। बाप तो दाता है नां। तो ऐसा नही सोचना है। ओम